Fn – यीशु ने ५,००० लोगों को खाना खिलाया मत्ती १४:१३-२१;
मरकुस ६:३०-४४; लूका ९:१०-१७; यूहन्ना ६:१-१३ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु ने ५,००० लोगों को खाना खिलाया

मत्ती १४:१३-२१; मरकुस ६:३०-४४; लूका ९:१०-१७; यूहन्ना ६:१-१३

खोदाई: यीशु मसीह पीछे क्यों हट गए? व्यवधान पर उनकी क्या प्रतिक्रिया थी? प्रेरितों ने शुरू में कैसी संवेदनशीलता दिखायी? स्थिति को देखने के तरीके में शिष्यों और यीशु किस प्रकार भिन्न थे? मत्ती १४:१६ में येशुआ के कथन के बाद उन्हें कैसा महसूस हुआ होगा? लूका ९:१३ में आप किस स्वर में सुनते हैं? मसीह ने फिलिप्पुस की परीक्षा कैसे ली? काना में विवाह (यूहन्ना २:१-११) इस परीक्षा में कैसे एक कारक हो सकता है? उनकी प्रतिक्रियाओं से, आप फिलिपुस और अन्द्रियास को क्या ग्रेड देंगे? चमत्कार के बाद उनकी संभावित प्रतिक्रिया क्या थी? कहानी का सबक क्या है?

चिंतन: आपके जीवन की कौन सी समस्याएँ ऐसी हैं जिनका कोई समाधान नहीं है? आपने प्रभु को आपके संसाधनों को आपकी कल्पना से भी आगे बढ़ते हुए कैसे देखा है? आपको अभी उस पर भरोसा करने की आवश्यकता कैसे है? आपको क्या लगता है कि यहोवा कैसे चाहता है कि आप अपने संदेहों से निपटें? आप किस तरह से फिलिपुस और अन्द्रियास की तरह हैं, एक कठिन परिस्थिति का सामना करने पर येशुआ के बारे में कुछ याद रखने में असफल हो रहे हैं? जब आप हाल ही में आध्यात्मिक रूप से भूखे रहे हैं तो यीशु ने आपको कैसे “खिलाया” है? यह कहानी आपको इस बारे में क्या सिखाती है कि परमेश्वर अपने लोगों की किस प्रकार देखभाल करता है? हाशेम ने किस तरह से आपको अपने जीवन में कठिनाइयों पर काबू पाने के लिए बुद्धि और शक्ति दी है? अन्य विश्वासियों का विश्वास हमें ईश्वर पर भरोसा करने के लिए कैसे प्रेरित करता है?

राज्य के शुभ समाचार का प्रचार करके लौटने पर बारह प्रेरितों ने मसीह को अपने मिशनरी भ्रमण के बारे में शानदार रिपोर्टें दीं। जब प्रेरित वापस आये (देखें Fk– यीशु ने बारह प्रेरितों को भेजा), तो उन्होंने येशुआ को वह सब बताया जो उन्होंने किया था और सिखाया था। यह एक ख़ुशी का अवसर था, सिवाय इसके कि उन्हें मास्टर को उनके अग्रदूत की मृत्यु के बारे में बताना था (देखें Fl– युहन्ना बप्तिस्मा देनेवाला का सिर काट दिया गया है)। युहन्ना के कई शिष्य उसकी फाँसी को लेकर गुस्से में थे और उन्हें इससे बेहतर कुछ भी पसंद नहीं था कि कोई उठे और उनके भविष्यद्वक्ता की मौत का बदला ले। यीशु से बेहतर उम्मीदवार कौन होगा? शायद यही उम्मीद उनके दिमाग में घूम रही थी।

Fn – यीशु ने ५,००० लोगों को खाना खिलाया मत्ती १४:१३-२१;
मरकुस ६:३०-४४; लूका ९:१०-१७; यूहन्ना ६:१-१३ | 2

किसी भी दर पर, उनका पुनर्मिलन बहुत लंबे समय तक नहीं चला। एक बार जब यह बात फैल गई कि वे कहाँ हैं, तो बड़ी संख्या में लोग अपने बीमारों को ठीक कराने के लिए फिर से इकट्ठा होने लगे। इतने लोग आ-जा रहे थे कि उन्हें खाने का भी मौका नहीं मिला। थोड़ा आराम पाने और अभियान पर चुपचाप बात करने का मौका पाने का एकमात्र तरीका (उन अनुभवों के व्यावहारिक सबक को अपने शिष्यों को इंगित करना) दूर जाना था। उसने उनसे कहा: मेरे साथ एक शान्त स्थान पर आओ और कुछ विश्राम करो (मरकुस ६:३०-३१; लूका ९:१०क)।

तब यीशु उन्हें अपने साथ ले गए और वे निजी तौर पर नाव से गलील सागर के दूर किनारे पर चले गए – जिसे कभी-कभी इसी नाम के शहर, टेट्रार्की की राजधानी के कारण तिबरियास सागर कहा जाता था – बेथसैदा जूलियास नामक शहर में (मत्तित्याहू १४:१३ए; मरकुस ६:३२; लूका ९:१०बी; युहन्ना ६:१)। यह हेरोदेस के अधिकार क्षेत्र से जॉर्डन के पार झील के उत्तरी छोर पर स्थित था। शहर के दक्षिण में एक उपजाऊ, लेकिन विरल आबादी वाला मैदान था, जहाँ घास की ढलानें थीं।

परन्तु जब प्रभु और बारह चले गए, तो लोगों की एक बड़ी भीड़ ने उन्हें जाते हुए देखा, और पहचान लिया, और झील के उत्तर की ओर जाने वाले भूमि मार्ग से पैदल ही उसके पीछे हो लिए, क्योंकि उन्होंने उन चिन्हों को देखा था जो उसने बीमारों को चंगा करके दिखाए थे। यह मार्ग लगभग दो मील ऊपर एक घाट को पार करता था जहाँ नदी गलील सागर में प्रवेश करती थी।

उन्माद में, अन्य लोग भी थे जिन्होंने उसके प्रस्थान के बारे में सुना, और विभिन्न शहरों से भीड़ दौड़कर उनके आगे वहां पहुंच गई (मती १४:१३बी; मरकुस ६:३३; लूका ९:११ए; युहन्ना ६:२)। क्या तस्वीर है। यदि आज किसी को उपचार का उपहार मिले, तो क्या हम वही चीज़ नहीं देखेंगे? हमारी विश्वव्यापी संचार क्षमताओं के साथ, क्या इसे पूरी दुनिया में नहीं देखा जाएगा? युहन्ना नोट करता है कि यहूदी फसह का त्योहार निकट था (यूहन्ना ६:४)। यह मसीह के मंत्रालय में वर्णित चार फसहों में से तीसरा है। पहला उल्लेख यूहन्ना २:१३ में किया गया है। दूसरा यूहन्ना ५:१ में है, जबकि तीसरा यहाँ यूहन्ना ६:४ में संदर्भित है, और चौथा यूहन्ना ११:५५, १२:१, १३:१, १८:२८ और ३९, और १९:१४ में है। । इन्हें डेटिंग करके, हम यह निष्कर्ष निकालने में सक्षम हैं कि उनका सार्वजनिक मंत्रालय साढ़े तीन साल तक चला।

पेसाच बिल्कुल वही समय था जब इज़राइल को मसीहा के आने की उम्मीद थी, और वे परमेश्वर के राज्य के उद्घाटन के रूप में मसीहा भोज की तलाश कर रहे थे। हम इसे मृत सागर स्क्रॉल और यहूदी धर्म के सर्वनाशी साहित्य के लेखन से देखते हैं। यह उनके सार्वजनिक मंत्रालय का तीसरा फसह था। इसका मतलब है कि उनका सार्वजनिक मंत्रालय शुरू हुए ढाई साल हो गए थे (देखें Bs– यीशु द्वारा मंदिर की पहली सफाई)। यह उनके मंत्रालय के अंतिम वर्ष की शुरुआत का भी प्रतीक है। उसे अगले फसह के पर्व पर क्रूस पर चढ़ाया जाएगा।

Fn – यीशु ने ५,००० लोगों को खाना खिलाया मत्ती १४:१३-२१;
मरकुस ६:३०-४४; लूका ९:१०-१७; यूहन्ना ६:१-१३ | 3

बड़ी भीड़ के आने से पहले यीशु एक पहाड़ी पर चढ़ गया, पहाड़ी देश का बेहतर अनुवाद किया, और अपने प्रेरितों के साथ बैठ गया (यूहन्ना ६:३)। यह जंगल या रेगिस्तान नहीं था। हमें नीचे बताया गया है कि उन्हें हरी घास पर बैठाया जाएगा। यह बस गांवों के पास एक निर्जन जगह थी। हालाँकि, येशुआ अभी भी भीड़ से बच नहीं सका। प्रभु जानते थे कि भारी बहुमत उन्हें स्वार्थी कारणों से चाहता है और इससे अधिक कुछ नहीं; फिर भी, अपने शिष्यों के विपरीत, जब वे उपद्रव करने लगे तब भी उन्हें उनके प्रति दया का अनुभव हुआ।

जब यीशु बेथसैदा जूलियस के तट पर उतरे, तो उन्होंने गलील सागर को छोड़ दिया और मानवता के सागर में कदम रखा। ध्यान रखें; वह भीड़ से दूर जाने के लिए समुद्र पार कर गया था। उसे हाल ही में इज़राइल राष्ट्र द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था (देखें Ek– यह केवल बील्ज़ेबब, राक्षसों के राजकुमार द्वारा है, कि यह साथी राक्षसों को बाहर निकालता है), और उसे शोक मनाने की ज़रूरत थी। प्रभु अपने शिष्यों के साथ आराम करना चाहते थे। उसे सिखाने और चंगा करने के लिए हजारों लोगों की एक बड़ी भीड़ के अलावा किसी और चीज की जरूरत थी। लेकिन लोगों के प्रति उनका प्यार उनकी आराम की ज़रूरत पर हावी हो गया।

लेकिन उसके प्रेरितों के साथ समय जल्द ही कम हो गया। जब चमत्कार करने वाले रब्बी ने ऊपर देखा तो उसने बड़ी भीड़ देखी और उसे उन पर दया आई (मती १४:१४ए; मरकुस ६:३४ए)। करुणा के लिए ग्रीक शब्द स्प्लेन्च्निज़ोमाई है, जिसका आपके लिए तब तक कोई खास मतलब नहीं होगा जब तक कि आप स्वास्थ्य पेशे में न हों और स्कूल में “स्प्लेनच्नोलॉजी” का अध्ययन न किया हो। यदि हां, तो आपको याद होगा कि “स्प्लेनकोलॉजी” का अध्ययन है। । । पेट। जब मती लिखता है कि यीशु को बड़ी भीड़ पर दया आयी, तो वह यह नहीं कह रहा है कि यीशु को उन पर दया आयी। नहीं, यह शब्द कहीं अधिक ग्राफिक है। मती कह रहा है कि मसीह ने उनकी चोट को अपने मन में महसूस किया।

उसे अपंगों की लंगड़ाहट का एहसास हुआ।

उन्हें रोगग्रस्त की पीड़ा का एहसास हुआ।

उसे कोढ़ी का अकेलापन महसूस हुआ।

उसे पापियों की शर्मिंदगी महसूस हुई।

और एक बार जब उसने उनके दुखों को महसूस किया, तो वह उन्हें ठीक किए बिना नहीं रह सका क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ों की तरह थे। उनके बीच सवाल था, “क्या हमें पुराने चरवाहों (फरीसियों और सदूकियों) का अनुसरण करना चाहिए, या नए का” (येशुआ हा-मशियाच)? उनके अनिर्णय ने उन्हें बिना चरवाहे की भेड़ों के समान बना दिया (गिनती २७:१७; यहेजकेल ३४:५)। हमारे प्रभु का इससे क्या मतलब था?

Fn – यीशु ने ५,००० लोगों को खाना खिलाया मत्ती १४:१३-२१;
मरकुस ६:३०-४४; लूका ९:१०-१७; यूहन्ना ६:१-१३ | 4

चरवाहे के बिना भेड़ें अपना मार्ग नहीं पा सकतीं। जीवन इतना विस्मयकारी हो सकता है। हम जीवन के कुछ चौराहे पर खड़े हो सकते हैं और नहीं जानते कि किस रास्ते पर जाएं। यह केवल तभी होता है जब मसीहा नेतृत्व करता है कि हम उसका अनुसरण करके रास्ता पा सकते हैं।

चरवाहे के बिना भेड़ें अपना चारागाह और अपना भोजन नहीं पा सकतीं। हमें उस ताकत की ज़रूरत है जो हमें आगे बढ़ाए रख सके; हमें उस प्रेरणा की आवश्यकता है जो हमें खुद से ऊपर उठा सके। जब हम इसे कहीं और खोजते हैं तो हमारा मन अभी भी अतृप्त होता है, हमारे हृदय अभी भी बेचैन होते हैं, हमारी आत्माएँ अभी भी अतृप्त होती हैं। हम केवल उसी से जीवन के लिए शक्ति प्राप्त कर सकते हैं जो जीवित रोटी है।

चरवाहे के बिना भेड़ों के पास उन खतरों से बचाव का कोई साधन नहीं है जिनसे उन्हें खतरा है। भेड़ें चोरों या जंगली जानवरों से अपनी रक्षा नहीं कर सकतीं। यदि जीवन ने हमें एक बात सिखाई है तो वह यह है कि हम इसे अकेले नहीं जी सकते। हम खुद को उन प्रलोभनों से नहीं बचा सकते जो हम पर हमला करते हैं, और उस बुराई से जो हम पर हमला करती है। केवल यीशु की संगति में ही हम दुनिया में चल सकते हैं और पवित्र पात्र बन सकते हैं। उसके बिना हम असहाय हैं; उसके साथ हम सुरक्षित हैं।

यीशु ने उनका स्वागत किया और उनसे परमेश्वर के राज्य के बारे में बात की। उन्होंने व्यक्तिगत आवश्यकता और विश्वास के प्रदर्शन के आधार पर उन सभी को ठीक किया जिन्हें उपचार की आवश्यकता थी (देखें En– मसीह के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन)। उनमें से अधिकांश को संभवतः रिश्तेदारों या दोस्तों द्वारा अपने साथ ले जाना पड़ा या मदद करनी पड़ी, और बाकी भीड़ के कई घंटों बाद पहुंचे। और वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा (मती १४:१४बी; मरकुस ६:३४बी; लूका ९:११बी)। भीड़, फरीसी यहूदी धर्म की शक्तिहीन शिक्षा से थक गई, एक नए प्रकार की शिक्षा को महसूस किया और अपने नए रब्बी को सुनने के लिए उत्सुक थी। एक बार फिर, विश्वास करने वाले लोग उसे समझेंगे और बिना विश्वास वाले लोग नहीं समझेंगे।

सूर्य अपनी मध्याह्न रेखा को पार कर चुका था और विशाल भीड़ पर छाया अधिक देर तक पड़ी रही। जैसे ही शाम हुई, प्रेरित उसके पास आए और कहा: पहले ही देर हो चुकी है और सूर्यास्त करीब आ रहा है (मरकुस ६:३५)। भीड़ को दूर भेज दें, ताकि वे भोजन और आवास खरीदने के लिए आसपास के ग्रामीण इलाकों में जा सकें क्योंकि हम यहां एक सुदूर स्थान पर हैं (मत्ती १४:१५; मरकुस ६:३६; लूका ९:१२)। यहाँ एक सीखने योग्य क्षण के रूप में। इस चमत्कार का उद्देश्य मुख्य रूप से प्रेरितों के निर्देश के लिए होगा, हालांकि जनता को भोजन, शिक्षण और उपचार से लाभ होगा।

लेकिन आश्चर्य की बात है कि प्रभु ने उत्तर दिया: उन्हें दूर जाने की जरूरत नहीं है। आप उन्हें खाने के लिए कुछ देते हैं (मती १४:१६; मरकुस ६:३७ए; लूका ९:१३ए)। ग्रीक में आप शब्द गहन है। मसीहा ने सचमुच कहा: जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुम

Fn – यीशु ने ५,००० लोगों को खाना खिलाया मत्ती १४:१३-२१;
मरकुस ६:३०-४४; लूका ९:१०-१७; यूहन्ना ६:१-१३ | 5

उन्हें कुछ खाने को दो। बारह के उनके निरंतर प्रशिक्षण से पता चलता है कि जो होने वाला था वह मुख्य रूप से उनके लिए ही था। लेकिन फिर मास्टर ने विशेष रूप से फिलिपुस की ओर अपना ध्यान आकर्षित किया। हम उनसे अपने पहले परिचय (Bp– युहन्ना के शिष्य यीशु का अनुसरण करते हैं) से जानते हैं कि वह तानाख के छात्र थे और उन्होंने इसकी शाब्दिक व्याख्या की और मसीहा में विश्वास किया। इसलिए जब मसीह उसके पास आए और कहा: मेरे पीछे आओ, तो उसने तुरंत यीशु को गले लगा लिया और बिना किसी हिचकिचाहट के उसके पीछे हो लिया। वह फिलिपुस का आध्यात्मिक पक्ष था। उसका दिल सही जगह पर था। वह आस्थावान व्यक्ति थे। लेकिन कभी-कभी वह कमज़ोर आस्था वाला व्यक्ति था।

तब यीशु ने फिलिप्पुस से कहा: हम इन लोगों के खाने के लिए रोटी कहां से खरीदें (यूहन्ना ६:५)? मास्टर टीचर ने फिलिपुस को क्यों चुना? युहन्ना हमें बताता है कि येशुआ ने यह केवल उसे परखने के लिए कहा था, क्योंकि उसके मन में पहले से ही था कि वह क्या करने जा रहा है (यूहन्ना ६:६)। फिलिपुस जाहिर तौर पर एपोस्टोलिक बीन काउंटर था, जो हमेशा संगठन और प्रोटोकॉल के बारे में चिंतित रहता था। वह ऐसे व्यक्ति थे जो हर बैठक में कहते थे, “मुझे नहीं लगता कि हम ऐसा कर सकते हैं।” इसलिए प्रभु स्वयं पर नज़र डालने और यह देखने के लिए उसकी परीक्षा ले रहे थे कि वह वास्तव में कैसा है – असंभव का स्वामी।

निस्संदेह, प्रभु को ठीक-ठीक पता था कि फिलिपुस क्या सोच रहा था। फिलिपुस ने शायद पहले ही सिर गिनना शुरू कर दिया था। जब बड़ी भीड़ अंदर जाने लगी, तो वह पहले से ही अनुमान लगा रहा था। दिन काफी देर हो चुकी थी. . . यह बहुत बड़ी भीड़ थी . . . उन्हें भूख लगने वाली थी . . . आसपास कोई मैकडॉनल्ड्स नहीं। इसलिए जब तक मसीहा ने सवाल पूछा, फिलिपुस ने पहले से ही अपनी गणना तैयार कर ली थी, “उन सभी को खाने के लिए पर्याप्त रोटी खरीदने में आधे साल से अधिक की मजदूरी लगेगी (मरकुस ६:३७बी; युहन्ना ६:७)! फिलिपुस केवल यह देख सका कि यह कितना असंभव था।

लेकिन जब चमत्कार करने वाले रब्बी ने पानी से शराब बनाई (यूहन्ना २:१-११) तो फिलिपुस वहां मौजूद था। वह पहले ही यीशु को कई बार लोगों को ठीक करते देख चुका था। लेकिन जब फिलिपुस ने भीड़ देखी, तो वह असंभव से अभिभूत महसूस करने लगा। वह बॉक्स से बाहर सोचने के लिए बहुत व्यावहारिक था। कच्चे तथ्यों की वास्तविकता ने उनके विश्वास को धूमिल कर दिया। ईसा मसीह की असीम अलौकिक शक्ति उनकी सोच से पूरी तरह ओझल हो गई थी। यहां तक कि अन्द्रियास के विश्वास (जैसा कि नीचे देखा गया है) को भी लॉजिस्टिक समस्या के विशाल आकार से चुनौती मिली थी। लेकिन फिलिपुस ने अपने विश्वास को पुरस्कृत होते देखने का अवसर खो दिया, जबकि अन्द्रियास के अल्प विश्वास को पुरस्कृत किया गया। फिलिपुस को अपनी व्यावहारिक चिंताओं को अलग रखना और विश्वास की अलौकिक क्षमता को पकड़ना सीखना था।

आपके पास कितनी रोटियाँ हैं? उसने पूछा। जाकर देखो।

Fn – यीशु ने ५,००० लोगों को खाना खिलाया मत्ती १४:१३-२१;
मरकुस ६:३०-४४; लूका ९:१०-१७; यूहन्ना ६:१-१३ | 6

दूसरे राजा ४:४२-४४ में सौ लोगों को खाना खिलाने से यहां पांच हजार लोगों को खाना खिलाने का पूर्वाभास हुआ। बालशालीशा से एक मनुष्य परमेश्वर के भक्त के लिये जौ की पहली पके हुए अनाज की बीस रोटियाँ और कुछ नये अनाज की बालें लेकर आया। जब एलीशा ने कहा, “इसे लोगों को खाने को दे,” तब उसके सेवक ने पूछा, “मैं इसे सौ मनुष्यों के सामने कैसे रख सकता हूँ?” परन्तु एलीशा ने उत्तर दिया, “इसे लोगों को खाने के लिये दे दो। क्योंकि यहोवा यों कहता है, कि वे खाएंगे और कुछ बचा भी लेंगे। तब उस ने उसे उनके आगे बढ़ाया, और यहोवा के वचन के अनुसार उन्होंने खाया, और कुछ बच भी गया। सेवक ने आज्ञा का पालन किया और परमेश्वर ने अपने वादे के अनुसार भोजन को कई गुना बढ़ा दिया। इस चमत्कार ने उन सभी को निर्देश दिया जिन्होंने इसके बारे में सुना था कि हा-शेम सीमित संसाधनों को बढ़ा सकता है (१ राजा १७:७-१६) जो उसे समर्पित थे और उनके साथ एक बड़ी भीड़ का पोषण और समर्थन कर सकता था।



तब बारहों में से एक, अन्द्रियास, जो शमौन पतरस का
भाई था, बोलकर बोला, यहां एक लड़का है जिसके पास पांच छोटी जौ की रोटियां और दो छोटी मछलियां हैं, परन्तु वे इतने लोगों के बीच कहां तक जाएंगे (मती १४:१७; मरकुस ६:३८) ; लूका ९:१३बी; युहन्ना ६:८-९)? बेशक, अन्द्रियास को भी पता था कि पांच जौ की रोटियां और दो छोटी मछलियां पांच हजार लोगों को खिलाने के लिए पर्याप्त नहीं होंगी, लेकिन (अपने विशिष्ट अंदाज में) वह लड़के को वैसे भी यीशु के पास ले आया। येशुआ ने इसकी आज्ञा दी और अन्द्रियास ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया। उसे भोजन का एकमात्र स्रोत उपलब्ध मिला, और उसने सुनिश्चित किया कि मसीहा को इसके बारे में पता हो। उसे कुछ-कुछ समझ में आ गया था कि चमत्कार करने वाले रब्बी के हाथों में कोई भी उपहार महत्वहीन नहीं है।

उन्हें यहाँ मेरे पास लाओ, यीशु ने कहा (मत्ती १४:१८)। तब उस ने अपने प्रेरितों से कहा, लोगों को बैठा दो। बारहों ने ऐसा ही किया, और सभी को सैकड़ों और पचास के समूहों में हरी घास पर बैठाया गया, एक मेज पर मेहमानों की तरह व्यवस्थित किया गया (मरकुस ६:३९-४०; लूका ९:१४बी-१५; युहन्ना ६:१०ए)। बैठने के लिए ग्रीक वास्तविक शब्द एनाक्लिनो है, यह शब्द एक भोज में सोफे पर लेटे हुए व्यक्ति के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह स्वतंत्र लोगों (गैर-गुलामों) की आराम करने की

Fn – यीशु ने ५,००० लोगों को खाना खिलाया मत्ती १४:१३-२१;
मरकुस ६:३०-४४; लूका ९:१०-१७; यूहन्ना ६:१-१३ | 7

पारंपरिक स्थिति है।

पारंपरिक तरीके से, मसीह ने प्रावधानों को लिया और एक बरखा या आशीर्वाद दिया। पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लेते हुए और स्वर्ग की ओर देखते हुए (प्रार्थना ईश्वर को आशीर्वाद देने के लिए है जिसने भोजन प्रदान किया था), यीशु ने धन्यवाद दिया और रोटियाँ तोड़ दीं (मती १४:१९ए; मरकुस ६:४१ए; लूका ९:१६ए; युहन्ना ६:११ए)। चूँकि यह रोटी पर आशीर्वाद था (भोजन के मुख्य व्यंजन का प्रतीक), प्रभु ने शायद मोत्ज़ी का उच्चारण किया, “धन्य हैं आप, हे यहोवा हमारे परमेश्वर, ब्रह्मांड के राजा, जो पृथ्वी से रोटी लाते हैं” या बारुख अता यहोवा, एलोहेनु मेलेच हा-ओलम, हा- मोट्ज़ी लेकेम मिन हा-अरेत्ज़। तल्मूड में कहा गया है, “किसी भी चीज़ को आशीर्वाद देने से पहले उसे चखना मना है” (ट्रैक्टेट बेराचोट ६:१)। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि यह रोटी बांटने का एक बहुत ही पारंपरिक तरीका है, इसे चाकू से काटने के बजाय हाथ से फाड़ना है। फाड़ना उस दिन का प्रतीक है जब राष्ट्र के विरुद्ध तलवार उठाने वाला कोई राष्ट्र नहीं रहेगा (यशायाह २:४)।

फिर उसने उन्हें लोगों को बाँटने के लिये तालमिद को दे दिया (मत्ती १४:१९बी; मरकुस ६:४१बी; लूका ९:१६बी)। दिया गया शब्द अपूर्ण काल और निरंतर क्रिया में है। वे लोगों को रोटी और मछली देते रहे। चमत्कार कैसे किया गया, इसके बारे में बाइबल कोई संकेत नहीं देती। हम केवल इतना जानते हैं कि उन सभी ने खाया और संतुष्ट हुए (मती १४:२०ए; मरकुस ६:४२; लूका ९:१७ए)।

जब उन सब के पास खाने को तृप्त हो गया, तो उसने अपने प्रेरितों से कहा: जो टुकड़े बचे हैं उन्हें इकट्ठा कर लो। कुछ भी बर्बाद न होने दें (यूहन्ना ६:११बी-१२)। इसलिए उन्होंने उन्हें इकट्ठा किया और खानेवालों से बची हुई रोटी और मछलियों से बारह टोकरियाँ भरीं (मत्ती १४:२०बी; मरकुस ६:४३; लूका ९:१७बी; यूहन्ना ६:१३)। हलाखा के अनुसार, भोजन को नष्ट करना निषिद्ध है (शब्बत ५०बी, १४७बी), सिवाय इसके कि अगर टुकड़े जैतून से छोटे हों (बराखोट ५२बी)। ये टोकरियाँ छोटी विकर टोकरियाँ (ग्रीक: कोफिनोन) थीं जिन्हें हर यहूदी अपने साथ ले जाता था जब वह घर से दूर होता था। वह अपना दोपहर का भोजन और उसमें कुछ आवश्यक चीजें ले गया ताकि उसे अपवित्र गैर-यहूदी भोजन न खाना पड़े।

खानेवालों की गिनती लगभग पाँच हज़ार थी।

Fn – यीशु ने ५,००० लोगों को खाना खिलाया मत्ती १४:१३-२१;
मरकुस ६:३०-४४; लूका ९:१०-१७; यूहन्ना ६:१-१३ | 8

यहां पुरुषों के लिए शब्द एंथ्रोपोस नहीं है, सामान्य शब्द जिसमें पुरुष और महिलाएं शामिल हो सकते हैं, बल्कि अन्य, एक व्यक्तिगत पुरुष के लिए शब्द है। पाँच हजार निस्संदेह एक पूर्ण आंकड़ा है, इसमें उपस्थित महिलाओं और बच्चों की गिनती नहीं की जा रही है। यदि उनकी गिनती की जाती तो कुल मिलाकर लगभग बीस हजार लोग होते (मती १४:२१; मरकुस ६:४४; लूका ९:१४ए; युहन्ना ६:१०बी)। यह युहन्ना की पुस्तक में यीशु के सात चमत्कारों में से चौथा है (यूहन्ना २:१-११; ४:४३-५४; ५:१-१५; ६:१६-२१; ९:१-३४; ११:१-४४)।

ये बेहद अनोखा चमत्कार है। पुनरुत्थान को छोड़कर यह सभी चार सुसमाचार लेखकों द्वारा दर्ज किया गया एकमात्र चमत्कार है। बेशक, पाँच हज़ार लोगों को खाना खिलाने के लिए यीशु को उस लड़के के दोपहर का भोजन करने की भी ज़रूरत नहीं थी। वह इतनी आसानी से शून्य से भी भोजन बना सकता था। लेकिन जिस तरह से उसने पाँच हज़ार चित्रों को खिलाया, उसी तरह यहोवा हमेशा काम करता है। वह हमारे द्वारा विश्वास में दिए गए बलिदान और प्रतीत होने वाले महत्वहीन उपहारों को लेता है और वह अद्भुत चीजों को पूरा करने के लिए उन्हें कई गुना बढ़ा देता है।

अब आप सोचेंगे कि प्रेरितों को यह बात समझ आ गई होगी कि मसीह उन्हें सिखाने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन जाहिर तौर पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। मरकुस हमें बताता है: क्योंकि उनके मन कठोर हो गए थे, इसलिए वे रोटियों के विषय में नहीं समझ पाए थे (मरकुस ६:५१बी-५२)। उन्हें सिखाने और मार्गदर्शन करने के लिए रुआच हाकोडेश अभी तक प्राप्त नहीं हुआ था। उन्होंने अभी तक येशुआ के प्रेरितिक विश्वविद्यालय से स्नातक नहीं किया था।

अल्फ्रेड एडर्सहैम ने कहा कि, “प्रभु ने अपने मंत्रालय के प्रत्येक चरण को भोजन के साथ समाप्त किया। उन्होंने पाँच हज़ार लोगों को खाना खिलाकर अपनी गैलीलियन सेवकाई समाप्त की। उसने चार हजार लोगों को खाना खिलाकर अपनी अन्यजाति सेवकाई समाप्त की। और क्रूस पर अपनी मृत्यु से पहले उसने यहूदी मंत्रालय को ऊपरी कमरे में अपने स्वयं के शिष्योंको खिलाकर समाप्त कर दिया।

एलोहीम, हम आप पर संदेह क्यों करते हैं? बार-बार, आपने अपनी वफ़ादारी साबित की है, फिर भी हमारा विश्वास डगमगाता है। हमारी ज़रूरतों को लगातार पूरा करने के लिए धन्यवाद। हमें संदेह से दूर रखें। हमें आप में विश्वास से भरें। हमें याद दिलाएं कि आप हमारी सभी समस्याओं और जरूरतों से बड़े हैं।